# PHILOSOPHY Part I & III

Hons. Paper I (Part I), Paper VIII (Part-III)

Dr. S. K. Singh
Mob.-9431449951

## सांख्य का Moksha (मोक्ष)

→ मनुष्य का सांसारिक जीवन आध्यात्मिक, आधिभौतिक तथा आधिदैविक दुःखों से भरा है। इन त्रिविध दुःखों की आत्यन्तिक निवृत्ति को सांख्य ने मोक्ष या कैवल्य कहा है।

→ सांख्य के अनुसार एक स्थूल शरीर से दूसरे स्थूल शरीर में जानेवाली आत्मा नहीं, वरन् लिंग-शरीर है। लिंग शरीर प्रकृतिज अठारह तत्त्वों का बना हुआ है; अर्थात् बुद्धि, अंहकार, ग्यारह इन्द्रियाँ (मन+पंचकर्मेन्द्रिय + पंच ज्ञानेन्द्रिय) तथा पाँच तन्मात्राएँ।

→ पुरुष की अपने स्वरूप की अवस्थिति ही मोक्ष है। इस प्रकार मोक्ष इस विवेकज्ञान से होता है कि पुरुष प्रकृति से भिन्न है; उसका प्रकृति से किसी तरह का लगाव नहीं है।

→ अतः सांख्य के तात्त्विक मतानुसार बन्धन और मोक्ष वास्तविक नहीं है, वे एक प्रकार से पुरुष में आरोपित हैं। 'मेरा प्रकृति से वास्तविक संबंध नहीं है, मैं वस्तुतः बद्ध नहीं हूँ' — यह तत्त्वज्ञान ही मोक्ष है। एक प्रकार से यह तत्त्वज्ञान भी बुद्धि की वृत्ति नहीं है, किन्तु यह बुद्धि-वृत्ति बुद्धि का अन्तिम व्यापार है जिसे अनुशिक्षित करके बुद्धि और उसके साथ प्रकृति का सारा पसारा अपने को पुरुष से अपवर्ग का लेता है।

→ जब रजस् और तमस् के दबने से बुद्धि-सत्व शुद्धता में पुरुष के समान हो जाता है, तब कैवल्य (मोक्ष) होता है।

→ पुरुष विशुद्ध चैतन्य रूप होने से वस्तुतः नित्यमुक्त है। वह परिणामातीत तथा बन्धन-मुक्ति-रहित है। वह बुद्धि में प्रकाशित अपने प्रतिबिंब के साथ तादात्म्य स्थापित कर लेने के कारण अन्तःकरणावच्छिन्न चैतन्य के रूप में अर्थात् जीव के रूप में प्रतीत होने लगता है। बन्धन इस जीव का होता है, पुरुष (आत्मा) का नहीं। आत्मा तो नित्यमुक्त है।

Scanned with CamScanner

→ सांख्य के मतानुसार पुरुष बन्धन और मोक्ष से असंपृक्त है। अन्तःकरणावच्छिन्न जीव का लिंग-शरीर के रूप में बन्धन होता है और उसी का मोक्ष होता है। इस प्रकार प्रकृति ही बंधती है और प्रकृति ही मुक्त होती है। यह प्रकृति ही है जो लिंग शरीर के रूप में, नाना पुरुषों के आश्रय से बंधती है (त्रिविध दुःख भोगती है), संसरण करती है और मुक्त होती है।

→ सांख्य मानता है कि प्रत्येक पुरुष के साथ बुद्धि, अहंकार, मन आदि सहित लिंग-शरीर अनादि काल से संबंधित है, यह संबंध अविवेकमूलक है और विवेक से विघटित (खंडित) अर्थात् समाप्त हो जाता है क्योंकि बंधन वास्तविक नहीं है।

→ सांख्य का रास्ता ज्ञानमार्ग है। ज्ञानी व्यक्ति अपने को न कर्ता मानता है, न भोक्ता। ऐसा ज्ञानी जीवित रहते हुये भी मुक्त होता है।

→ ज्ञान बन्धन को खंडित कर सकता है क्योंकि बन्धन ~~वास्त~~ वास्तविक नहीं है। ज्ञान किसी वस्तु का विनाश नहीं कर सकता, ~~क्यों~~ वह वस्तु का प्रकाशक होता है।

→ कर्म गुणों से संभव है, अतः कर्म से मोक्ष नहीं मिल सकता; क्योंकि मोक्ष निस्त्रैगुण्य है। शुभ कर्मों से (धर्म से) स्वर्गादि और अशुभ कर्मों से (अधर्म से) नरकादि की प्राप्ति होती है। ज्ञान से ~~बन्धन~~ मोक्ष और अज्ञान से बन्धन होता है।

→ इस प्रकार सांख्य के अनुसार पुरुष नित्यमुक्त है। विवेक-ज्ञान के उदय के पूर्व भी वह मुक्त ही था। भेद-ज्ञान के उदय होने पर जिसका निषेध होता है वह वास्तविक आत्मा नहीं अपितु केवल दोषपूर्ण तादात्म्य है। कैवल्य (मोक्ष) की अवस्था पुरुष के शुद्ध चैतन्य की अवस्था है। ~~कैवल्य में~~

→ कैवल्य की स्थिति आनन्द से रहित विशुद्ध चैतन्य की स्थिति है।

Scanned with CamScanner